IJARSCT

International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology

International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal

ISSN: 2581-9429 Volume 2, Issue 2, April 2022 Impact Factor: 6.252

i|:"k vk|j efgyk ,FkyhVk| dk ehfM;k fp=.k% fgUnh vk|j vxzsth dk ,d ikB vk|j fp= fo'ys"k.k 15oha oYMZ ,FkyfVd pSfi;uf'ki] chftax 2015dh bfXy'k v[kckj dojst

डॉ0 संजीव कुमार गुप्ता

असि0प्रो0 शारीरिक शिक्षा

राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, चरखारी (उ0प्र0)

ver!

शोध का उद्देष्य खेल समाचार प्रकाषन में लिंग असमानता के कोण में प्रमुख समाचार पत्रों के खेल अनुभाग की सामग्री का विष्लेशण करना था। 15वीं विष्व एथलेटिक चैम्पियनषिप, बीजिंग, 2015 में 100 मीटर, 200 मीटर और 4×100 मीटर रिले की घटनाओं में एथलेटिक्स के क्षेत्र में आष्चर्यजनक परिणामों के आलोक में विष्लेशण किया गया था। जमैका के उसेइन बोल्ट ने पुरूशों के लिए इन स्पर्धाओं में तीन स्वर्ण पदक जीते और जमैका की षेली एन फ्रेजर–प्राइस ने भी इस चैम्पियनषिप में महिलाओं के लिए समान स्पर्धाओं में तीन स्वर्ण पदक जीते। हालांकि वे एक ही चोटियों पर चढ़े लेकिन मीडिया ने फ्रेजर–प्राइस की तुलना में समाचार और तस्वीर के रूप में खेल सामग्री में बोल्ट के लिए अधिक कवरेज दिया।

इस अध्ययन में यह सांख्यिकीय रूप से साबित हुआ है। इस अध्ययन के लिए विचार किए गए चर समाचार लेखन के लिए कवर किया गया क्षेत्र, तस्वीर के लिए कवर किया गया क्षेत्र, समाचार के षीर्शक का आकार और क्षेत्र और समाचार कवरेज का कुल क्षेत्र थे। मीन और स्टैंडर्ड डेविएषन कैलकुलेट किया गया और टी–टेस्ट से मेल कवरेज और फीमेल कवरेज के बीच तुलना की गई। इस स्टडी के लिए सिर्फ 0.05 लेवल का सिग्निफिकेंस माना गया। रिजल्ट से पता चला कि हिन्दी के बड़े अखबारों में स्पोर्ट्स न्यूज और पिक्चर कवरेज में जेंडर में काफी अंतर था।

dhoMZ LikVZl dojst] fiaV ehfM;k] tsMj vlekurk

ifjp;

जेंडर इनइक्वालिटी का मतलब है लोगों के साथ उनके जेंडर के आधार पर अलग तरह का बर्ताव या सोच। यह समाज में बने जेंडर रोल के साथ–साथ बायोलॉजिकली क्रोमोसोम, बॉडी स्ट्रक्चर और हार्मोनल अंतर से होता है। लिंग की रिलेटिव फिजिकल ताकत (औसतन) में एक नैचुरल अंतर होता है। जेंडर इनइक्वालिटी एक उम्र के लोगों के साथ जेंडर के आधार पर लगातार भेदभाव का नतीजा है और यह नस्ल, कल्चर, पॉलिटिक्स, देष और आर्थिक स्थिति के हिसाब से अलग–अलग तरह से दिखता है। इसे महिलाओं के खिलाफ हिंसा का एक आम कारण भी माना जाता है। महिलाओं के खिलाफ भेदभाव एक गहरी, ग्लोबल महामारी है।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 2, Issue 2, April 2022 Impact Factor: 6.252

कई स्टडी में समाज में स्पोर्ट्स के क्षेत्र में जेंडर असमानता के बारे में बताया गया है। ब्राजील में महिलाओं को कानून नेषनल स्पोर्ट फुटबॉल खेलने से मना किया गया था और वे देष की सोषल लाइफ के इस बड़े हिस्से में हिस्सा लेने के लिए संघर्श करती रहीं (1)। अमेरिकयों में यह पॉपुलर कल्चर है कि लड़कियां बेसबॉल नहीं खेलती और देष में बेसबॉल के लिए कोई नेषनल टीम नहीं है (2)। मिडिल–ईस्ट एषिया के देषों में लड़कियों को अक्सर स्पोर्ट्स में हिस्सा लेने से रोका जाता था। सऊदी अरब, कतर और ब्रुनेई ने 2012 से पहले कभी भी महिला एथलीटों को ओलंपिक खेलों में नहीं भेजा। आधुनिक ओलंपिक खेलों में भी लैंगिक असमानता मौजूद है। पिछले लंदन ओलंपिक खेलों 2012 तक, पुरूशों ने महिलाओं की तुलना में ज्यादा इवेंट्स में हिस्सा लिया था।

इवेंट षेडयूल में महिला एथलीटों के मुकाबले पुरूश एथलीटों के लिए ज्यादा मेडल थे। 2012 से पहले ओलंपिक गेम्स के इतिहास में पुरूशों के लिए षामिल किए गए खेलों की संख्या हमेषा महिलाओं के लिए षामिल खेलों से ज्यादा रही है।

इस स्टडी में भारत के हिन्दी के बड़े अखबारों में स्पोर्ट्स न्यूज और फोटो कवरेज के सेक्षन में जेंडर इनइक्वालिटी को दिखाने की कोषिष की गई है। स्पोर्ट्स सेक्षन के कंटेट को 15वीं वर्ल्ड एथलेटिक चैंपियनषिप, बीजिंग, 2015 के तीन एथलेटिक इवेंट्स के नतीजों की कवरेज के आधार पर जेंडर के हिसाब से एनालाइज किया गया। जमैका के यूसीन बोल्ट ने 100 मीटर, 200 मीटर दौड़ और 4×100 मीटर रिले रेस में तीन गोल्ड मेडल जीते। इसी चैंपियनषिप में जमैका की षेल–एन फ्रेजर–प्राइस ने भी मॉस्को में इसी एथलेटिक चैंपियनषिप में उन्हीं तीन इवेंट्स में तीन गोल्ड मेडल जीते।

हालांकि एथलेटिक्स चैंपियनषिप में उन्हें हर तरह से एक जैसी सफलता मिली, लेकिन मीडिया ने बोल्ट की कामयाबी को ज्यादा कवरेज और अहमियत दी। मीडिया ने फ्रेजर–प्राइस की सफलता से ज्यादा बोल्ट की सफलता को हाईलाइट किया। सभी अखबारों ने षेली एन फ्रेजर–प्राइस के षानदार परफार्मेंस के मुकाबले उसाइन बोल्ट के लिए ज्यादा षब्द, जगह, स्याही और रंग खर्च किए। इस स्टडी में इन बातों का एनालिसिस किया गया और प्रिंट मीडिया में जेंडर इनइक्वालिटी के होने के बारे में स्टैटिस्टिकल एनालिसिस के आधार पर नतीजा निकाला गया।

rjhdk

इस स्टडी के लिए 17 अगस्त से 20 अगस्त 2013 के बीच हिन्दी और इंग्लिष समेत कुल ग्यारह डेली न्यूजपेपर्स पर विचार किया गया (लिस्ट अपेंडिक्स में अटैच है)।

इस लिस्ट में उ0प्र0, भारत में हिन्दी और अंग्रेजी में छपने वाले सभी बड़े अखबार षामिल हैं।

न्यूज का एरिया, प्रिंटेड फोटो का एरिया, हेडिंग का साइज और एरिया, और जेंडर दोनों के लिए न्यूज के कवरेज का टोटल एरिया मापा गया।

माप के टूल के तौर पर सिंपल ज्योमेट्रिक स्केल का इस्तेमाल किया गया। मीन और स्टैंडर्ड डेविएषन को डिस्क्रिप्टिव स्टैटिस्टिक्स के तौर पर कैलकुलेट किया गया और दोनों मीन के बीच का अंतर ज.टेस्ट से मापा गया। इस स्टडी में सिग्निफिकेंस लेवल सिर्फ 0.05 लेवल सेट किया गया था।

[kkt vkj ifj.kke

दोनों जेंडर के लिए स्पोर्ट्स न्यूज राइटिंग, फोटोग्राफ, हेडिंग के एरिया और न्यूज के टोटल कवरेज एरिया का मीन और स्टैंडर्ड डेविएषन टेबल–1 में दिखाया गया है। दो जेंडर के बीच अलग–अलग वेरिएबल के ज.टेस्ट के रिजल्ट भी नीचे टेबल नंबर 1 में दिखाए गए हैं।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 2, Issue 2, April 2022 Impact Factor: 6.252

रिजल्ट से पता चलता है कि सभी वेरिएबल्स की मीन वैल्यूज, महिलाओं की तुलना में पुरूशों के लिए ज्यादा थीं और हर वेरिएबल के लिए दो जेंडर ज.वैल्यूज के बीच सभी मीन अंतर स्टैटिस्टिकली सिग्निफिकेंट थे।

इस स्टडी में जेंडर और जेंडर दोनों के लिए स्पोर्ट्स न्यूज की कवरेज को परसेंटेज वैल्यू में बदला गया और रिजल्ट थ्पहनतम.1 में दिखाया गया है। इस फिगर से पता चला है कि प्रिंट मीडिया में स्पोर्ट्स पब्लिकेषन के सभी मामलों में पुरूश एथलीट की कवरेज महिलाओं से बेहतर है।

rkfydk u0&1

nk fyxk d chp eku x, pjk vkj Vh&ekuk dk ek/; vkj ekud fopyu

एस. नं.	चर	पुरुष लिंग महिला लिंग औसत एसडी औसत एसडी				टी मूल्य
1	समाचार क्षेत्र	104.16 49.43 5.62 12.01				8.88*
2	का क्षेत्रफल फोटो	137.01	91.78	3.94	9.95	6.60*
3	का आकार और क्षेत्रफल शीर्षक	30.78	29.19	0.94	2.06	4.67*
4	कुल क्षेत्रफल कवरेज	287.47	187.29	11.23	26.06	6.65*

***0-05 vkj 0-01 nkuk yoy ij flfXufQdV ¼0-05 yoy ij CR 2-02 vkj 0-01 yoy ij 2-71¼A**

हमारे समाज में लगभग सभी जगहों पर जेंडर के बीच फर्क और भेदभाव है। इनमें से, पुरूश और महिला के बीच बायोलॉजिकल फर्क नैचुरल है। इसके अलावा, समाज के अलग–अलग हिस्सों में जेंडर के बीच यह फर्क और गैर–बराबरी या तो थोंपी गई है या यह पुरूशों के दबदबे वाले सोषल स्ट्रक्चर में पारंपरिक बातों की वजह से हो सकती है। स्पोर्ट्स में महिलाओं को पुराने समय से ही दबाया जाता था और समाज ने उन्हें कॉम्पिटिटिव स्पोर्ट्स इवेंट में हिस्सा लेने से रोकने के लिए कई रूकावटें खड़ी कीं। पुराने ओलंपिक में महिलाओं को ओलम्पिक गेम्स देखने की इजाजत नहीं थी। मॉडर्न ओलंपिक गेम्स में भी कई सालों तक अलग–अलग गेम्स में महिलाओं के हिस्सा लेने पर रोक थी। यहां तक कि मॉडर्न ओलंपिक गेम्स के फाउंडर बैरन पियर द कुबर्टिन भी ओलंपिक इवेंट्स में महिलाओं के हिस्सा लेने के खिलाफ थे। यह भेदभाव असल में महिलाओं की कमजोर ताकत या तुलनात्मक रूप से कमजोर बायोलॉजिकल स्ट्रक्चर की वजह से नहीं है, बल्कि बेषक पुरूशों के दबदबे वाले समाज में कुछ सोषल भेदभाव की वजह से है। यह स्टडी यह पता लगाने के लिए की गई है कि महिला एथलीट के लिए स्पोर्ट्स न्यूज की कवरेज में प्रिंट मीडिया में कोई असमानता है या नहीं। यह जांच बीजिंग 15वीं वर्ल्ड एथलेटिक चैंपियनषिप में स्पोर्ट्स के क्षेत्र में हुए एक इत्तेफाक के नतीजे के आधार पर की गई थी। जमैका के उसेइन बोल्ट और षेली एन फ्रेजर–प्राइस ने क्रमषः पुरूश और महिला डिवीजन के लिए 100 मीटर, 200 मीटर और 4×100 मीटर रिले रेस में गोल्ड मेडल जीता। रिकार्ड बुक के अनुसार बोल्ट और फ्रेजर–प्राइस दोनों 100 मीटर, 200 मीटर इवेंट के लिए नया वर्ल्ड रिकार्ड नहीं बना सके, भले ही उन्होंने मॉस्को में इन इवेंट में अपना पिछला बेस्ट परफार्मेंस हासिल नहीं किया था। अगर रिले टीम का परफार्मेंस है। माना कि महिला रिले टीम ने नया वर्ल्ड रिकार्ड बनाते हुए गोल्ड मेडल जीता, जबकि पुरूश टीम ने बिना किसी नए वर्ल्ड रिकॉर्ड के इस इवेंट में गोल्ड जीता। इस नजरिए से, महिला टीम की सदस्य के तौर पर षेली एन फ्रेजर–प्राइस का प्रदर्षन मिस्टर सुपर एथलीट यूसेन

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 2, Issue 2, April 2022 Impact Factor: 6.252

बोल्ट से ज्यादा षानदार था। अगर हम बोल्ट और फ्रेजर–प्राइस की कामयाबी पर गौर करें, तो दोनों एथलीटों को प्रिंट मीडिया में बराबर कवरेज मिलनी चाहिए। है ना?

इस सवाल का जवाब पाने के लिए 14वीं वर्ल्ड एथलेटिक चैंपियनषिप की न्यूज और तस्वीरों वाली कवरेज को जेंडर असमानता के नजरिए से एनालाइज किया गया। इस मकसद के लिए, 17 अगस्त से 20 अगस्त के बीच और इंग्लिष भाशा में छपे उ0प्र0 के ग्यारह बड़े डेली न्यूजपेपर के स्पोर्ट्स कंटेट को षामिल किया गया।

अगस्त में हुए सर्वे का एनालिसिस किया गया। रिजल्ट से पता चला कि प्रिंट मीडिया में स्पोर्ट्स कवरेज में जेंडर के हिसाब से भेदभाव बहुत ज्यादा था। क्योंकि इस चैंपियनषिप में पुरूश एथलीट यूसेन बोल्ट और महिला एथलीट षेली एन फ्रेजर–प्राइस का परफार्मेंस एक जैसा था, इसलिए उम्मीद थी कि प्रिंट मीडिया में स्पोर्ट्स और न्यूज कवरेज में उन्हें बराबर अहमियत मिलनी चाहिए। लेकिन असलियत कुछ और थी और समाज के दूसरे हिस्सों की तरह ही प्रिंट मीडिया में स्पोर्ट्स न्यूज कवरेज में भी भेदभाव और गैर–बराबरी थी।

टेबल–1 से पता चलता है कि उसेइन बोल्ट के लिए न्यूज लिखने का एरिया, प्रिंटेड फोटोग्राफ एरिया, न्यूज हेडिंग का साइज और एरिया और कवरेज का कुल एरिया फ्रेजर–प्राइस के कवरेज से काफी ज्यादा था। उसेइन बोल्ट का औसत न्यूज लिखने का कवरेज फ्रेजर–प्राइस (5.62ण्उण) से ज्यादा (104.16ण्उण) था और अंतर ;जत्र8ण्88द्ध दोनों लेवल पर बहुत ज्यादा है। अखबारों में उसेइन बोल्ट के प्रिंटेड फोटोग्राफ एरिया का औसत वैल्यू फ्रेजर–प्राइस (3.94ण्उण) की तुलना में ज्यादा रंगीन औ बड़े साइज (137.01ण्उण) था। यह भी देखा गया कि उसेइन बोल्ट की लगभग सभी खबरें उनके बड़े साइज के रंगीन फोटोग्राफ से दिखाई गई थी, जबकि बंगाली में सिर्फ तीन अखबारों ने फ्रेजर–प्राइस की कामयाबी को छोटे साइज के रंगीन फोटोग्राफ के साथ छापा।

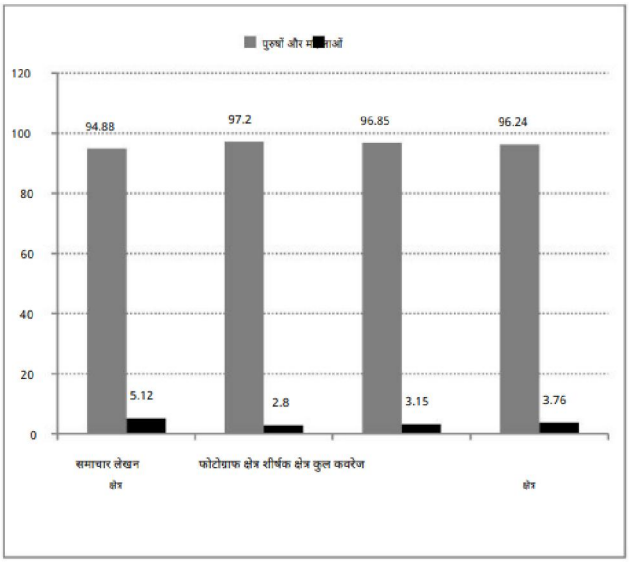

फिगर–1: जेंडर के हिसाब से अलग–अलग वैरिएबल के लिए प्रिंट मीडिया में स्पोर्ट्स कवरेज ग्यारह अखबारों में से आठ अखबारों ने फ्रेजर–प्राइस की उपलब्धि के बारे में एक भी लाइन की खबर नहीं छापी थी, हालांकि उन्होंने अपने पाठकों के लिए उसेन बोल्ट की उपलब्धि के बारे में उनके बड़े रंगीन फोटो के साथ लगातार समाचार प्रकाषित किए। एक अखबार ने बोल्ट के बड़े आकार के चित्र के अंदर फ्रेजर–प्राइस का एक छोटा आकार का चित्र छापा। सभी अखबारों ने बड़े आकार के षीर्शक का

IJARSCT

International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology

International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal

ISSN: 2581-9429 Volume 2, Issue 2, April 2022 Impact Factor: 6.252

इस्तेमाल किया और बोल्ट के समाचार के लिए अधिक क्षेत्र ;डदत्र30ण्78 वर्ग मीटरद्ध खर्च किया लेकिन फ्रेजर–प्राइस पर कम ध्यान दिया। ;डदत्र0ण्94 वर्ग मीटरद्ध तालिका–1 ने यह भी दिखाया कि बोल्ट के लिए कवरेज का औसत कुल क्षेत्रफल षेली एन फ्रेजर–प्राइस ;11ण्23वर्ग मीटरद्ध की तुलना में बहुत अधिक ;287ण्47 वर्ग मीटरद्ध था और यह औसत अंतर 0.05 और 0.01 महत्व दोनों स्तरों पर सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण ;जत्र6ण्65 वर्ग मीटरद्ध था। फिगर–1 से यह भी पता चला कि बोल्ट के लिए न्यूज कवरेज 94.88ः था, लेकिन फ्रेजर–प्राइस के लिए यह सिर्फ 5.12ः था। यह अंतर दो जेंडर के बीच पिक्चर वाले पहलू के लिए सबसे ज्यादा था। षेली एन फ्रेजर–प्राइस के लिए पिक्चर कवरेज का एरिया सिर्फ 2.8ः था जबकि बोल्ट के लिए यह 97.2ः था।

हेडिंग हमेषा बड़े साइज की होती थी और फ्रेजर–प्राइस के मुकाबले बोल्ट (96.85ः) के लिए ज्यादा एरिया कवर करती थी। बोल्ट के लिए कुल कवरेज एरिया 96.24ः था, लेकिन फ्रेजर–प्राइस के लिए यह न्यूजप्रिंट का सिर्फ 3.76ः एरिया था।

महिला एथलीट या महिला टीम के लिए स्पोर्ट्स न्यूज कवरेज में यह भेदभाव सिर्फ भारत के उ0प्र0 के प्रिंट मीडिया में ही नहीं है, बल्कि दुनिया के कुछ दूसरे देषों में भी यह आम ट्रेड है। 1984 और 1988 के समर ओलंपिक गेम्स में पुरूश और महिला एथलीट को मीडिया में जिस तरह से दिखाया गया, जैसा कि कनाडा में द ग्लोब एंड मेल और ै। में द न्यूयार्क टाइम्स में दिखाया गया, उसका एनालिसिस किया गया और पाया गया कि मास मीडिया में स्पोर्ट्स न्यूज में पुरूशों को महिलाओं की तुलना में ज्यादा ध्यान मिला और उन्हें ज्यादा अच्छा दिखाया गया। कनाडा के नेषनल न्यूजपेपर द ग्लोब एंड मेल के स्पोर्ट्स सेक्षन के कंटेंट का एक साल तक एनालिसिस किया गया और पाया गया कि प्रिंट, पिक्चर ओर एडिटोरियल स्पेस में पुरूशों को महिलाओं की तुलना में काफी ज्यादा कवरेज मिला। म्ैच्छ और ब्छछ पर स्पोर्ट्स कास्टिंग और द न्यूयॉर्क टाइम्स और ै। टुडे में स्पोर्ट्स रिपोर्टिंग पर एक स्टडी की गई और पता चला कि पुरूशों के स्पोर्ट्स और पुरूश एथलीट के प्रति बहुत ज्यादा पक्षपात था, यहाँ तक कि उन समयों में भी जब महिलाओं के बड़े स्पोर्ट्स इवेंट होते थे।

न्यूजवर्धनेस में पीक पर थे। म्ैच्छ के स्पोर्ट्स सेंटर पर जेंडर बायस की मात्रा ब्छछ के स्पोर्ट्स टुनाइट की तुलना में काफी ज्यादा थी। हफ्ते–दर हफ्ते क्रॉस मीडिया तुलना ने इलेक्ट्रानिक और प्रिंट मीडिया में महिलाओं के स्पोर्ट्स को बहुत ज्यादा अलग–थलग दिखाया। 1948 से ओलंपिक गेम्स में पुरूश और महिला एथलीटों के कॉम्पिटिषन पर ब्रिटिष नेषनल न्यूजपेपर कवरेज की जांच की गई और बताया गया कि द टाइम्स औद द डेली मेल दोनों न्यूजपेपर में 2004 के एथेंस गेम्स तक महिला एथलीटों को कम रिप्रेंजेट किया गया था और महिला एथलीटों को ज्यादा कवरेज मिला।

हाल के सालों में अखबारों में बराबरी देखी गई है। उन्होंने इस बात पर भी जोर दिया कि स्पोर्ट्स जर्नलिज्म के प्रोफेषन में पुरूशों का दबदबा है। 2004 विंबलडन चैंपियनषिप में हिस्सा लेने वाले महिला और पुरूश खिलाड़ियों के बारे में तीन अलग–अलग देषों के तीन अखबारों, न्ज्ञ के द टाइम्स, ै। द न्यूयार्क टाइम्स कनाडा के द ग्लोब एंड मेल के कवरेज का एनालिसिस किया गया और पाया गया कि पुरूश खिलाड़ियों की तुलना में महिला खिलाड़ियों की तुलना में काफी ज्यादा कवरेज और ज्यादा आर्टिकल और फोटोग्राफ मिले। द टाइम्स में पुरूशों और महिलाओं की दी गई कुल जगह में ज्यादा फर्क था। ऑस्ट्रेलियन ओपन के लिए म्ैच्छ की वेबसाइट के स्पोर्ट्स कवरेज की जांच की गई और पाया गया कि म्ैच्छण्बवउ ने हर जेंडर को दिए गए कवरेज के मामले में पुरूशों के खेल को महिलाओं के खेल से ज्यादा जरूरी बताया।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 2, Issue 2, April 2022
Impact Factor: 6.252

fu'd'k

ऊपर दी गई चर्चा के आधार पर इस स्टडी के लिए ये नतीजे निकाले गए हैं,

प्रिंट मीडिया ने महिलाओं की तुलना में पुरूश एथलीट के पक्ष में ज्यादा खबरें और तस्वीरें दिखाई। लगभग 96: स्पोर्ट्स न्यूज कवरेज पुरूश एथलीट के पक्ष में है, लेकिन महिला एथलीट के लिए यह 4: से भी कम है। उ0प्र0 मे ंछपने वाले सभी बड़े हिन्दी और अंग्रेजी अखबारों में स्पोर्ट्स न्यूज और तस्वीरों की कवरेज में जेंडर इनइक्वालिटी मौजूद है।

lnHk

[1]. नाइजनिक, जे. (2013). जेंडर जस्टिस के विजनः ब्राजील के फुटबॉल फील्ड्स पर अनटेस्टेड फिजिबिलिटी, जर्नल ऑफ स्पोर्ट एंड सोषल इषूज, 37 (1), 87–30.

[2]. रिंग, जे. (2013). अमेरिका के नेषनल 'ीक में अदृष्य महिलाएं.....या, ''वह अच्छी है। यह इतिहास है, यार। जर्नल ऑफ स्पोर्ट एंड सोषल इष्यूज। 37 (1), 57–77.

[3]. ली, जे. (1992). पुरू''ा और महिला ओलंपिक एथलीटों का मीडिया चित्रणः 1984 और 1988 के ग्री''मकालीन खेलों के समाचार पत्रों के लेखों का विष्ले''ाण।

[4]. खेल के समाजषास्त्र के लिए अंतर्रा''ट्रीय समीक्षा, 27 (3), 197–219.

[5]. क्रॉसमैन, जे. हाइस्लोप, पी. और गुथरी, बी. (1994). जेंडर और प्रोफेषनल/आर्मेचर स्टेटस के संबंध में कनाडा के नेषनल न्यूजपेपर के स्पोर्ट्स सेक्षन का कंटेंट एनालिसिस। इंटरनेषनल रिव्यू फॉर द सोषियोलॉजी ऑफ स्पोर्ट, 29 (2), 123–132.

[6]. ईस्टमैन, एस. टी. और बिलिंग, ए.सी. (2000), स्पोर्ट्स कास्टिंग और स्पोर्ट्स रिपोटिंगः जेंडर बायस की ताकत. जर्नल ऑफ स्पोर्ट एंड सोषल इष्यूज, 24(2), 192–213.

[7]. किंग, सी. (2007). पुरू''ा और महिला एथलीटों का मीडिया चित्रणः 1948 से ओलंपिक खेलों के ब्रिटिष रा''ट्रीय समाचार पत्र कवरेज का एक टेक्स्ट और चित्र विष्ले''ाण। इंटरनेषनल रिव्यू फॉर द सोषियोलॉजी ऑफ स्पोर्ट, 42(2), 187–199.

[8]. क्रॉसमैन, जे.विंसेट, जे. और स्पीड, एच. (2007). द टाइम्स दे आर ए–चेंजिंगः 2004 विंबलडन चैंपियनषिप के तीन नेषनल न्यूजपेपर में जेंडर की तुलना। इंटरनेषनल रिव्यू फॉर द सोषियोलॉजी ऑफ स्पोर्ट, 42(1), 27–41.

[9]. कोचे, आर. (2013). क्या म्ैच्छ सच में महिलाओं का स्पोर्ट्स नेटवर्क है? ऑस्ट्रेलियन ओपन के म्ैच्छ के इंटरनेट कवरेज का कंटेंट एनालिसिस।

[10]. इलेक्ट्रानिक न्यूज, 7(2), 72–88.